शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक यथार्थ

राधेश्याम

शोधार्थी, हिन्दी विभाग

विनोबा भावे विश्वविद्यालय,

हजारीबाग (झारखण्ड)

शोध–सार

आधुनिक हिंदी साहित्य के अंतर्गत व्यंग्य विधा लेखन की परम्परा नई विधा नहीं है। यदि साहित्य में व्यंग्य विधा का अर्थ उक्ति के तीक्ष्ण रूप में प्रस्तुत करना हो तो इसकी परिपाटी हम पीछे कम–से–कम मध्यकाल तक तो ला ही सकते हैं। व्यंग्य साहित्य आदिकाल में एक बीज के रूप में उपजा, जो वर्तमान समय में आज साहित्यिक विधा के रूप में विशाल वृक्ष बन चुका है। उस विशाल वृक्ष को गूढ़ आधार विधा प्रदान करने में कबीर, भारतेंदु, श्रीलाल शुक्ल, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, नरेन्द्र कोहली और हरीश नवल जैसे असंख्य व्यंग्यकारों की विशेष भूमिका रही है। अन्य साहित्यिक विधाओं से व्यंग्य विधा भाषा, शैली और महत्व के आधार पर अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनाता है। व्यंग्य की भाषा में सबसे ज्यादा ग्राम्य शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों व गालियों का व्यवहार होता है। वस्तुतः व्यंग्य साहित्य का उद्देश्य होता है कि वह पाठकों को समाज के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों के प्रति जागरुक करे तथा उसके अंतःकरण में उन विसंगतियों के विपरीत रोष उत्पन्न हो, जिससे वह इन विकृतियों से समाज को बचा सकने में सफल हो। व्यंग्य का उद्देश्य समाज को संस्कार कर विसंगतियों के खिलाफ दुरुस्त करना है।

बीज शब्द : व्यंग्य, राजनीति, राजनेता, राष्ट्र, समाज, शरद जोशी, नैतिकता, मानवीय मूल्य, लोकतंत्र, शासन इत्यादि।

मुख्य शोध :

शरद जोशी हिंदी साहित्य के एक उत्कृष्ट एवं मानवीय गुणों से युक्त व्यंग्यकार हैं। इन्होंने अपना समस्त जीवन व्यंग्य साहित्य के उन्नति एवं समृद्धि के लिए अर्पित कर दिया। शरद जोशी को वर्तमान समकालीन व्यंग्य साहित्य में कबीर के रूप में जाना जाता है। क्योंकि व्यंग्य साहित्य में जो अनेकता शरद जोशी के साहित्य में दिखाई पड़ता है वह किसी अन्य व्यंग्यकार के साहित्य में नहीं मिलता। शरद जोशी उन व्यंग्यकारों की सूची में आते हैं, जिन्होंने समकालीन समस्त समस्याओं का पर्दाफाश किया। उन समस्याओं के नींव में जाकर समाधान के युक्तियों को भी पाठकों के समक्ष रखने का प्रयास किया। इन्होंने अपने व्यंग्य के जरिये जनसमुदाय को दुरुस्त करने का प्रयास किया। शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में विषय चयन से लेकर भाषा और शैली में भी अनेकरूपता दिखाई देती है।

शरद जोशी का आधुनिक युग के समकालीन व्यंग्यकारों में गणमान्य स्थान है। ये बचपन से ही पढ़ने-लिखने में बुद्धिमान थें। इनके मन में शुरू से ही हिंदी के प्रति प्रेम व लगाव था, जिसे निम्न संदर्भ के द्वारा द्रष्टव्य किया जा सकता है- "उन्होंने बचपन में प्रेमचंद, शरद एवं देवकीनंदन खत्री द्वारा लिखित पुस्तकों को घरवालों से छिपाकर पढ़ा था। धीरे-धीरे गद्य लेखन में रुचि बढ़ने लगी। उन्होंने चेखब, यशपाल, गोर्की, मोपांसा, बालजाक, प्रेमचंद, ओ हेनरी, कृष्ण चंदर इत्यादि जैसे लेखकों को पढ़ा था। स्कूल की पढ़ाई के साथ शरत जी को अभिनय में भी रुचि थी।"[1] साहित्यकार के रूप में शरद जोशी ने 'परिक्रमा' से अपने लेखक जीवन की शुरुआत की और 'यथासंभव' तक आते-आते लगभग तीन दशक की लंबी व्यंग्य विधा की यात्रा की। व्यंग्य साहित्य लेखन के साथ-साथ शरद जोशी ने कवि सम्मेलनों में व्यंग्य पढ़ने की परम्परा शुरू की। इस प्रकार व्यंग्य विधा की लेखन इनके जीवन और लेखकीय सिद्धांत का एक अविभाज्य अवयय बन गया। अपने व्यंग्य के माध्यम से जनसमुदाय में व्याप्त दुराचार, अन्याय, जुल्म, अनौचित्य और नाइंसाफी को विनियमित करके तबदीली लाने का सार्थक प्रयत्न किया। समाज एवं देश की अनेकों विडम्बनाओं से जूझने की कोशिश से इनके व्यंग्य लेखन का फलक बहुआयामी बन गया है। धर्म, साहित्य, संस्कृति, राजनीति, समाज और शिक्षा के हरेक क्षेत्र में फैली विसंगतियों का नितांत वर्णन शरद जोशी के व्यंग्य निबंधों की आत्मा है। इन तमाम क्षेत्रों में इनका व्यंग्य साहित्य तीक्ष्ण आघातों के साथ-साथ संशोधन की भी उत्तेजना प्रदान करता है।

शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य समाज की विडम्बनाओं और विसंगतियों को देख पाने और तीक्ष्ण दृष्टि से व्यंग्य के माध्यम से रख पाने में परिचायक है। इन्होंने जीवन के पृथक दृष्टिकोणों को व्यंग्यात्मक नजर से देखा। इसका प्रमुख कारण यह है कि शरद जोशी ने भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने जीवन का कुछ समय बिताया। इसीलिए इनकी व्यंग्य साहित्य की भाषा और शैली विस्तृत एवं विशद बन गई है। शरद जोशी वक्त के साथ निरंतर बढ़ते रहे तथा व्यंग्य साहित्य के प्रस्तुतीकरण एवं उसके रचना शिल्प को नवीनता व नयापन देते रहें। सदा व्यंग्य साहित्य की रचना करने के कारण और सामाजिक विसंगति को समाहित कर उस पर आघात करने की शक्ति के कारण शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य लेखन में अतिरिक्त प्रखरता आ गई।

हमारे राष्ट्र की राजनीति में परिपूर्ण इसी प्रकार की चैगिर्द विसंगतियों, रूपहीनताओं, कुरुपताओं और विडम्बनाओं का पर्दाफाश करने का कर्म शरद जोशी ने अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से किया है। इस प्रकार की पतित, भ्रष्ट, चरित्रहीन, चालबाज, तिकडमबाज और निर्लज्ज राजनीति वर्तमान समय में सत्ता हासिल करने का माध्यम बन गया है। आज की राजनीति में सिद्धांतों, चिंतनों और मूल्यों का कोई महत्ता नहीं है। वर्तमान समय में सत्य, वैराग्य, त्याग और शहादत जैसे मूल्य समाप्त हो गए हैं तथा दुष्टता, नीचता, मिथ्या, हिंसा एवं अवसरवाद राजनीति के मुख्य आदर्श बन गए हैं। शरद जोशी ने राजनीति में परिपूर्ण इसी निरर्थक मूल्यों को जनसमुदाय के सम्मुख नंगा किया है- "तरकटी पर बैठे मुर्दे वोट माँग रहे हैं। चमचों के कंधों पर बैठ सारे देश की यात्रा पर चले हैं ये कुर्सी के प्रेत। राम नाम सत्य है। आम नाम सत्य है। जनता नाम सत्य है। समूची वोटर लिस्ट सत्य है। दूध पीने निकले हैं राष्ट्र के चंदन से लिपटे साँप। पगडंडियाँ तलाश रही हैं कस्बों में घुसने की। वादों और इरादों के गलियारे खोजते झूठ के पुराने मसीहा।

लोकसभा से मुँह चुराने वाले न्यायलय से मुँह चुराने वाले। कुर्सी पर बैठने के बाद लगे कलंकों को ढकते ये नंगे फिर आए है, लोकतंत्र से तोलियाँ मांगने। यदि वोट मिल जाए, तो ये आपके थूक से स्नान कर लेंगें। ये वही नपुंसक है, जिन्हें गीत गाकर हम सुहाग-कक्ष तक छोड़कर आए थे। अब फिर आए हैं सेहरा बँधवाने। राजनीति के इन मगरमच्छों को कीचड़ में छप-छप करना खूब आता है।"[2]

सता की चाहत ने नेताओं का आचरण व स्वभाव संदेहयुक्त बना दिया है। वर्तमान समय में राजनेताओं में यह धारणा पनपने लगी है कि यह राष्ट्र की सत्ता समाजहित व राष्ट्रहित के लिए न होकर स्वार्थ सिद्धि के लिए है। यही कारण है कि देश के प्रत्येक विभाग में भ्रष्टाचार व अनैतिकता का प्रभाव है। वर्तमान समय में हरेक राजनीतिक पार्टी का लक्ष्य केवल सत्ता प्राप्त कर भ्रष्टाचार, आतंक, मार-पीट, धोखा, घूसखोरी व लूट-पाट करना रह गया है। शरद जोशी ने प्रत्येक राजनेता के दूषित व निंदनीय कार्य को अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से नितांत मजबूत व शक्तिशाली रूप में सामने लाया है। यहाँ तक की जो राजनेता समाजवाद के नाम पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं, उन समाजवादियों की असमाजिक कार्यों की निंदा करते हुए शरद जोशी लिखते हैं- "समाजवाद सबका सहारा है। वह उखड़ने वाले मुख्यमंत्री का अंतिम सहारा है, उखाड़ने की कोशिश करने वालों का वही शस्त्र है। पिछले वर्षों में पदाभिलाषी नेता कुर्सी के लिए लड़ते थे। आजकल बेहतर समाजवादी बेहतर समाजवाद के लिए लड़ते हैं। थोपा हुआ मुख्यमंत्री समाजवाद क्यों लाएगा। समाजवाद बहुत किस्मों का होता है, मगर सारी किस्मों की एक विशेषता होती है, वह निरन्तर आता रहता है। आते रहने की सूचना समाजवाद की एकमात्र पहचान है।"[3]

भ्रष्टाचार की यही हवा पूरे राष्ट्र के परिवेश को खराब कर दिया है। नैतिकता, मनुष्यता, सज्जनता, अहिंसा एवं उदारता की यह प्रसिद्ध भूमि भारत आज नेताओं की काले कारनामों से दूषित होते जा रहा है। ये राजनेता भ्रष्टाचार के मुख्य केन्द्र बन गए हैं और सारी सरकारी योजनाओं एवं गरीबों को लूट रहे हैं। अनैतिकता से लिप्त आज राजनीति में सारे विचार और सिद्धांत निष्फल व अनुपयोगी हो गए हैं। आज राजनीति का मूल्य व सिद्धांत केवल पद और पैसा को प्राप्त करना रह गया है। सार्वजनिक क्षेत्र, सरकारी कार्यालय एवं प्रशासन में भ्रष्टाचार की हवा बह रही है। इस हवा में समस्त जनमानस इस तरह अचेत हो गया है कि अपने अधिकारों के लिए आवाज भी नहीं उठाता। इस पर विचार करले हुए डा॰ सूर्यकांत शिंदे लिखते हैं- "भ्रष्टाचार की दिन-दूनी रात चैगुनी। कितनी डाल, कितने पत्ते, कितने फूल और लुक-छिपकर आती कैसी मदमाती सुंगध। यह मिट्टी बड़ी उर्वरा है, शस्य श्यामला, काले करमों के लिए। दफ्तर नर्सरियाँ हैं बड़े बाग जिनके निगहबान बाबू, सुपरिन्टेंड, एम॰ ए॰ विदेश रिटर्न, आजादी के आंदोलन में जेल जाने वाले, चरखे के कतैया, गाँधी जी के चेले, बयालीस के जुलूस के वीर... कैसे खा रहे हैं रिश्वत गप-गप। ठाठ हो गए सुसरी आजादी मिलने के बाद।"[4]

दूषित कार्यों को शरण देने से ही समस्त राजनीतिक दलों को मूल्यवान वस्तुएँ एवं धन संपदा की प्राप्ति होती है। वे अपनी जड़ें बलवान करने के लिए अनैतिक कार्य और पूंजीपतियों का सहारा लेते हैं। समस्त राष्ट्र में व्याप्त भ्रष्टाचार को हिफाजत रखने का काम राजनीतिक आयाम का होता है। यही कारण है कि राजनेता, मंत्री, सरकारी अधिकारी एवं आम नागरिक का प्रतिनिधित्वकर्ता बिना डर के भ्रष्टाचार करते हैं और आम जनमानस के अधिकारों का हरण करते हैं। आज तक न जाने राजनेताओं और मंत्रियों के

द्वारा कितने घोटाले और कितने करोड़ रुपये बेईमानी से हड़पे गए। इतना होते हुए भी वर्तमान समय तक किसी राजनेता और मंत्री को सजा न होने का कारण यही राजनीतिक सुरक्षा यंत्र है। जैसे ही कोई राजनेता सत्ता में आता है, तुरंत अवाम की लूट–मार और आर्थिक शोषण में लग जाता है। जिस वजह से आज सत्ता के जनतंत्रवादी ढाँचे में आहिस्ता–आहिस्ता धन, धोखा, धूर्तता, दुष्टता एवं छल–कपट समा गया, जिसके कारण सारे सिद्धांत व जीवन मूल्य अदृश्य व अंतर्हित हो गए। लोकतंत्र के इस मरण पर शरद जोशी के व्यंग्य पर टिप्पणी करते हुए डा॰ दुर्गा खत्री लिखते हैं– “स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान की गई प्रतिज्ञा को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 326 ने पूरा किया। राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा के अध्यक्ष होने के नाते इसे आस्था का विषय कहा था। 1952 के आम चुनावों में पच्चीस करोड़ भारतीय जनता को वोट देने का अधिकार था। भारतीय आम चुनाव विश्व के चुनावों में सबसे बड़ा था। 1952 के आम चुनाव में केन्द्रीय चुनाव आयोग से लेकर चुनाव अफसर तक पचास लाख व्यक्तियों में केन्द्रीय चुनाव के प्रबंध में भाग लिया।“[5]

धर्मनिष्ठा, ईमानदारी, वास्तविकता, न्यायसंगत, मानवीयता एवं नैतिकता का नकारात्मक अर्थ लोकतंत्र को बनावटी व मिथ्यावादी बना देता है। वर्तमान समय में समसामयिक राजनीति और राजनेताओं की यही स्थिति है। शरद जोशी अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से ऐसे ही खुदगर्ज, स्वार्थपरायण, दुष्ट, निंदनीय एवं हीन राजनेता की पोल खोलते नजर आते हैं। शरद जोशी राजनेताओं को बगुले का प्रतीक मानकर अपने साहित्य में व्यंग्य करते हैं– “भैंसे तालाब के बीच तक उत्तर जाने वाली, मैं किनारे बैठे मौन–मतलबी। फिर भी पता नहीं क्या नाता है कि बगुले भैंसों के आसपास रहते हैं। जहाँ भैंसें होती है, ये बड़ा अपनापा महसूस करते हैं। सम्बन्ध दिलचस्प है, पर आश्चर्यजनक नहीं। यदि बगुले को गौर से देखो, स्थानीय नेता सा लगता है।“[6]

राजनेताओं का ईमान ऊपर से जितना श्वेत व उज्ज्वल दिखाई पड़ता है उतना ही उनका ईमान अंदर से दगाबाज, धोखेबाज व स्वार्थी होता है। उनके प्रत्येक कर्म के पीछे धूर्तता व कपट छिपा है। लोक जनसमूह के प्रति उसके अंतःकरण में कोई वेदना व सहानुभूति नहीं होती है। वे वेदना प्रकट करने के लिए मिथ्या मगरमच्छ के तरह आँसू बहाता है। इस संदर्भ में शरद जोशी अपने व्यंग्य साहित्य में विचार रखते हुए लिखले हैं– “इंच भर गहरी संवेदना नहीं होती पर मगर के आँसू जोर–शोर से ब्रॉडकास्ट किए जाते हैं। जो कुछ है सब ऊपरी। फिर चाहे शिक्षा पर जोर हो या गरीबों की फिक्र। सारे नारे और सिद्धांत अपने मजे के लिए रगड़े जाते हैं।“[7]

वर्तमान समय में हमारे राष्ट्र में राजनीति का अभिप्राय ही हो गया है– मिथ्या, दंभ, धोखा, धूर्तता एवं अहिंसा। नेताओं का निज स्वार्थ मानवीय मूल्यों से ऊपर हो गया है तथा राजनीति मरण व संहार की ओर उदीयमान है। राजनेता सर्वदा अनुचित कर्मों में लगे रहते हैं। इन सब दृश्यों को देखकर शरद जोशी प्रश्न करते है कि, क्या नेताओं को पवित्रता से एलर्जी है ? देश के नेताओं का नैतिक कर्म था कि वे राष्ट्र के प्रगति व समृद्धि में अपना योगदान दे। साधन–सामग्री का औचित्यपूर्ण उपयोग करें, राष्ट्र में फैले अव्यवस्था, राजशून्यता और स्वार्थलोलुपता को जड़ से मिटाएँ। किन्तु आज के भ्रष्ट नेता अपने नैतिकता का परित्याग करके स्वार्थता में तल्लीन हैं। यहीं वजह है कि आम जनमानस की अभिलाषा व उत्कंठा धूल

में मिल गई, आम जनमानस का नेताओं पर से आत्मविशवास उठ गया तथा हृदय से उन नेताओं के प्रति घृणा करने लगे।

आजाद भारत में राजनीतिक मूल्य कभी भी आम नागरिक के लिए हुआ ही नहीं। राजनेताओं ने राजनीति में एक नई संस्कृति को स्वीकारा, जिससे हमारा समाज अव्यस्थित व अस्वस्थ बन गया। आज की नीति बन गई की जो ईमान और न्याय का निर्वाह करेगा वह सत्ताधारियों द्वारा बर्बाद कर दिया जाएगा। शरद जोशी इन्हीं चरित्रहीन सत्ताधारियों के चरित्र का पोल खोलते हुए लिखते हैं– "भारत आज इस ऊँचाई पर है कि कमीशन खाता है, इसीलिए एक गैरजरूरी इमारत के निर्माण पर जोर दिया गया और वह खड़ी की गई, निजी फायदे बँट गए।"[8]

शरद जोशी ने समकालीन समय की समस्त विसंगतियों पर निर्भीकतापूर्वक आघात किया है। इनके व्यंग्य साहित्य का उद्देश्य सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्थाओं को सुधारना था। इन्होंने कभी भी किसी भी राजनीतिक पार्टी के समर्थन में जाकर व्यंग्य लेखन नहीं किया। इसीलिए शरद जोशी को आधुनिक काल का सर्वमान्य राजनीतिक व्यंग्यकार के रूप में जाना जाता है। क्योंकि एक व्यंग्यकार के लिए जिस निरपेक्षता व उदासीनता का गुण होना चाहिए, वे सारे गुण शरद जोशी में विद्यमान थे। इसीलिए शरद जोशी के व्यंग्य लेखन के कलात्मकता पर टिप्पणी करते हुए सुभाष चंदर लिखते हैं– "शरद जोशी के व्यंग्य की सबसे बड़ी विशेषता उनकी कलात्मकता है। शिल्प को लेकर जितने प्रयोग उन्होंने किए हैं, उतने कहीं नहीं मिलते।"[9]

शरद जोशी ने तकरीबन अपने समसामयिक आर्थिक, सामाजिक धार्मिक एवं राजनीतिक विषयों पर व्यंग्य किया है। राजनीति में दल–बदल की प्रवृति, निरर्थक राजनीति एवं चाटुकारिता जैसे विकृत राजनीति को शरद जोशी ने पूरी तटस्थता से प्रस्तुत किया है। इन राजनीतिक कुकर्मों के प्रभाव से देश में धार्मिक अंधविश्वास, किसानों–मजदूरों की दयनीय स्थिति, नैतिक मूल्यों का ह्रास व कालाबाजार बढ़ते जा रहा हैं। इन्हीं मूल्यहीनता के प्रति पाठकों को सचेत कर व्यंग्यकार इन राजनीतिक कुकर्मों से डटकर सामना करने की प्रेरणा भी देता हैं। जोशी जी का व्यंग्य साहित्य हरिशंकर परसाई के समान विषयों की अनेकता व उदारता लिए है। पर हरिशंकर परसाई के तरह शरद जोशी ने बिडम्बनाओं को किसी राजनीतिक सैद्धांतिक दृष्टि से नहीं देखा। इस संदर्भ में व्यंग्य आलोचक सुभाष चंदर लिखते हैं– "परसाई जी की तरह उनपर तटस्थ ना होने का आरोप नहीं लग सकते। उनका व्यंग्यकार राजनीतिक घटनाक्रम को किसी विशेष पार्टी की नजर से नहीं देखता।"[10]

शरद जोशी ने राजनेताओं व मंत्रियों के चारित्रिक ह्रास को अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से वर्णित किया है। इनका व्यंग्य साहित्य भारतीय राजनीति में क्रांतिकारी बदलाव के लिए प्रेरित करता है। शरद जोशी का व्यंग्य जनवाद का समर्थक है, जो उनकी राजनीतिक यथार्थ एवं जन विचार को सिद्ध करता है। इस संदर्भ में डा॰ शंकरदयाल शर्मा लिखते हैं– "शरद जोशी को मैं एक अत्यंत संवेदनशील रचनाकार मानता हूँ। अपने समय की सामाजिक–राजनीतिक विसंगतियों को उन्होंने अत्यंत पैनी निगाह से देखा और उसे अत्यंत सटीक शब्दों में व्यक्त किया।"[11]

भारतीय प्रजातंत्र में प्रत्येक 5 वर्ष के उपरांत एक बार मतदान उत्सव होता है। यह संसदीय प्रजातंत्र का उत्सव है उपयुक्त मतदान। मतदान में जनप्रतिनिधि के रूप में खड़ा हुआ व्यक्ति अधिक सुशील व शिष्ट नजर आता है। चुनाव के वक्त राजनेता अपनी विलक्षण मानसिकता को घर में ही छोड़ बाहर आता है एवं वोट मांगते हुए जनसमुदाय के बीच सरल व सहज व्यक्ति की तरह सामने आता है। इस कपटी नेताओं पर व्यंग्य करते हुए शरद जोशी लिखते हैं– "आज नेता महोदय ने पुराना कुर्ता निकालकर पहना है। उसे कुर्ते का पुराना होना अखरा नहीं। आज उन्होंने एक घिसी हुई, फटी हुई चप्पल पहनी।"[12]

वर्तमान समय में हमारा भ्रष्ट समाज एवं राजनीति अफसरशाही के माध्यम से अत्याचार व अन्याय करता है। सरकारी दफ्तरों में दिक्कत यह है कि बिना रिश्वत और घूस से काम पूरा नहीं होता। सरकारी दफ्तर एवं राजनेता का मिलीभगत है, जिससे सामान्य मनुष्य व्याकुल व चिंतित हैं। इस सरकारी प्रशासन पर तीक्ष्ण व्यंग्य करते हुए शरद जोशी लिखते हैं– "इस खेत से झल्लियाँ नहीं है ? बड़े अफसर ने पूछा। जी, नहीं है, छोटा अफसर बोला। कुतो नजर आ रही है, जी हाँ, कुछ तो है, कुछ तो हमेशा रहती है, खास नुकसान नहीं करती। फिर भी खतरा है।"[13]

शरद जोशी ने स्वतंत्रता के बाद प्रजातंत्र की परछाई में होने वाले चुनाव तथा उसकी कुरूपताओं को बड़ी बारीकी से देखा व परखा। देश की प्रजातांत्रिक नियंत्रण व्यवस्था में चुनाव का प्रचुर महत्ता है। इसके बिना लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः चुनाव ही लोकतंत्रात्मक राज्य के स्थापना की गणमान्य पद्धति है। फिर भी इस प्रकार के लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में विसंगतियाँ आ गई है। इन्हीं विसंगतियों एवं विद्रूपताओं पर व्यंग्य करते हुए शरद जोशी लिखते हैं– "जिस सड़ी–गली और भ्रष्ट व्यवस्था में हम प्रजातांत्रिक बने साँस ले रहे हैं उसका निम्नतम बिंदू मतदान केंद्र है, जहाँ अनैतिकता सारे कपड़े उतार नृत्य करती है।"[14] इसी तरह शरद जोशी आगे राजनीतिक व्यंग्य में पौराणिक आख्यानों का आश्रय लेते हुए लिखते हैं– "अब कहाँ रहे वे लोग व वैसे वोटर, न वैसे नेता। अब तो जो छंटा हुआ धूर्त होता है वही जाता है दिल्ली। गुजर गया जमाना वह भैया, क्या प्रजातंत्र होता था उस समय में। खैर छोड़ो, आज की सोचो। ये ससुरे खड़े हो गए हैं, इनमें एक भी है वोट के काबिल।"[15]

निष्कर्ष :

शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में जिन पहलुओं पर विचार किया गया उससे यह पता चलता है कि इनकी राजनीतिक दृष्टि बड़ी प्रचंड थी। यही कारण है कि शरद जोशी ने समाज में व्याप्त जिन विसंगतियों को बुद्धिमतापूर्ण दृष्टि से देखा उसी बुद्धिमतापूर्ण देश की राजनीति में व्याप्त अनैतिकता, मूल्यहीनता व अराजकता को परिवर्तित करने का कार्य भी किया। देश में राजनीतिक पार्टियों व राजनेताओं की सिद्धांतहीनता व वैचारिक चिंतन शून्यत्व व अभाव की बहुत बड़ी व्यंग्योक्ति है। इसीलिए राजनीतिक व्यंग्य साहित्य लेखन वर्तमान राजनीतिक यथार्थ का विश्लेषणात्मक अभिलेख है। अतः शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य राजनीतिक यथार्थ तथा सामाजिक यथार्थ को विश्वसनीय बनाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शरद जोशी का राजनीतिक व्यंग्य उन्हें उपयुक्त अर्थों में एक नियंत्रित व प्रतिबद्ध व्यंग्यकार के रूप में प्रमाणसिद्ध करता है।

संदर्भ संकेत :

1. येरावार, संतोष विजय. *शरद जोशी के साहित्य में व्यंग्य*. कानपुर: वाल्या प्रकाशन, 2016, पृ॰ 16.
2. जोशी, शरद. *वोट ले, दरिया में डाल*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ॰ 15.
3. जोशी, शरद. *वोट ले, दरिया में डाल*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2016, पृ॰ 22.
4. शिंदे, डा॰ सूर्यकांत. *शरद जोशी का व्यंग्य साहित्य*. कानपुर: पूजा पब्लिकेशंस, 2011, पृ॰ 137.
5. खत्री, डा॰ दुर्गा. *शरद जोशी और ज्योतीन्द्र दबे के साहित्य में हास्य व्यंग्य निरुपण*. कानपुर : चिंतन प्रकाशन, पृ॰ 100.
6. जोशी, शरद. *यथासम्भव, मैसन्हि माँह रहत निज बकुला*. नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 1985, पृ॰ 17.
7. जोशी, शरद. *यथासम्भव, मैसन्हि माँह रहत निज बकुला*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 1985, पृ॰ 17.
8. जोशी, शरद. *यथासम्भव, चरित्र! हँह!*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 1985, पृ॰ 65.
9. चंदर, सुभाष. *हिंदी कंग्य का इतिहास*. नई दिल्ली: भावना प्रकाशन, 2017, पृ॰ 247.
10. चंदर, सुभाष. *हिंदी कंग्य का इतिहास*. नई दिल्ली: भावना प्रकाशन, 2017, पृ॰ 247.
11. w.w.w.शरदजोशी.को.इन.
12. जोशी, शरद. *यत्र-तत्र-सर्वत्र*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 2009, पृ॰ 11.
13. जोशी, शरद. *यथासम्भव, चरित्र! हँह!*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 1985, पृ॰ 48.
14. जोशी, शरद. *प्रतिदिन-भाग-तीन*. नई दिल्ली: किताबघर प्रकाशन, 2010, पृ॰ 317.
15. जोशी, शरद. *यथासम्भव, चरित्र! हँह!*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 1985, पृ॰ 87.